श्रीरामचंद्रिका-पुस्तकमाला का द्वितीय प्रकाश

भजन श्रीकृष्ण

अनुराग-चन्द्रिका

लेखक—

श्रीयुक्त पं० चंद्रिकाप्रसाद "व्यास"

संपादक—

पं० सुन्दरलाल वाजपेयी

प्रकाशक—

लाला श्यामलाल

रामचंद्रिका-पुस्तकमाला

कालभैरव, बनारस।

मुद्रक—श्रीमहतावराय, सरस्वती-प्रेस, काशी।

नवीनवार [illegible] सं० १९८३ वि० [ग्योडावर]॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उपदेश

प्रातकाल मध्याह्न सांझ, दिन-रैन कृष्ण-हरि रटा करे। काम क्रोध मद लोभ मोह रिपु मारि प्रेम रस चखा करे॥ यह संसार अपार सिन्धु में नाम नाव को सफा करे। अति अनुराग नीर निरमल से कर्म कीचको रफाकरे॥ अलख निरञ्जन मुनिमन रञ्जन जसुमति नन्दन जपा करे॥ श्याम बरन तन अरुन चरन तल, पीताम्बर मणिमाल गरे। सीस मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुन अधर पर मुरली धरे॥ नव सरोज रतनारे नैना, जन सुख देना रंग भरे। नाक बुलाक कुटिल केंच लटकत, कल कपोल आनन्द भरे। राधाबर की श्याम सुंदर की, छबि बांकी चित धरा करे॥ (प्रातकाल मध्याह्न सांझ दिन रैन कृष्ण हरि रटा करे)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनुराग-चान्द्रिका

प्रभु आज लाज राखो, ऐ द्वारिका निवासी। मेरी विपति में मेरा, कोई नज़र न आता। अब बेगि धर्म राखो, ऐ द्वारिका निवासी ॥ १ ॥ बैठे सकल सभा में सुति नीति धर्म खोई। करते हमें उघारी, ऐ द्वारिका निवासी ॥२॥ पांचो पती यती-से चुप मार हार बैठे। कोई न हाथ धरता, ऐ द्वारिका निवासी॥३॥तुम हो ग़रीब-परवर, मैं अति गरीबिनी हूं। सब लाज हाथ तेरे, ऐ द्वारिका निवासी ॥४॥ (प्रभु आज लाज राखो, ऐ द्वारिका निवासी।)

अब तो नज़र में आजा, मुनि-मन लोभानेवाले। सूरत मुझे दिखा जा, सूरज

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

छिपानेवाले ॥ १ ॥ तेरे लिये ऐ प्यारे, छानी मैं ख़ाक सारे । क्योंकर दया बिसारे, दिल के चोरानेवाले ॥ २ ॥ मैं हूं अनाथ नारी, आई शरण तुम्हारी । पति राखिये हमारी, बिगरी बनानेवाले ॥ ३ ॥ वह कौन-सी जगह है, जहां जाके प्रभु को ढूंढूँ । अपना पता बता जा, बंसी बजानेवाले ॥ ४ ॥ (अब तो नज़र म आजा मुनि-मन लोभानेवाले ।)

इतना तो करना स्वामी, फिर प्राण तन से निकले । गोबिन्द नाम कह के, फिर प्राण तन से निकले ॥ टेक ॥ श्रीगंगाजी का तट हो, वो जमुनाजी का बट हो । गौवें खड़ी निकट हों, फिर प्राण तन से निकले ॥ १ ॥ श्रीबृन्दाबन का थल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो । विष्णुचरण का जल हो, फिर प्राण तन से

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

निकले ॥२॥ ढिग सांवला खड़ा हो, बंसी का सुर भरा हो। तिरछा चरन धरा हो, फिर प्राण तन से निकले ॥३॥ सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो। यह ध्यान मेरे घट हो, फिर प्राण तन से निकले ॥ ४ ॥ उस वक्त जल्दी आना, नहीं कौल भूल जाना। नूपुर की धुनि सुनाना, फिर प्राण तन से निकले ॥ ५ ॥ जब कंठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे। तू दरश जब दिखावे, फिर प्राण तन से निकले ॥ ६ ॥ यह दास की है अरजी, आगे तुम्हारी मरजी। करता है अरज गरजी, फिर प्राण तन से निकले ॥ ७ ॥ (इतना तो करना स्वामी, फिर प्राण तन से निकले।)

श्याम-राधे के हिये कस जुदाई होयगी। वे बसी उनक हिय, कैसै लड़ाई होयगी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

॥ १ ॥ रैन-दिन दोनों की देखी, प्रीति हुलसानी रहे। फिर भला ये रीति में, कैसे खोटाई होयगी ॥ २ ॥ जैसी उनमें है मुहब्बत, कुंज में दिखलायगी। प्रेम की मुरति दोऊ, कैसे सफाई होयगी ॥ ३ ॥ राधे-राधे, कृष्ण-राधे, जपते हैं वे हर गली। हम भी राधेश्याम की, कैसे खोटाई होयगी ॥ ४ ॥ (श्याम-राधे क हिये कैसे जुदाई होयगी।)

जाव ऊधो ज्ञान लेकर, कूबरी रहती जहां। मन तो मोहन ले गयो, अब जोग लहै को यहां ॥ १ ॥ हम हैं योगिनि प्रेम-पथ की, नेम-पथ जाने कहां। योग-जप-तप, नेम-व्रत-संयम सकल करि हैं कहां ॥ २ ॥ एक यह हम जानतीं, मोहन बसैं मर हिय। और वृजभूमी न छोड़ैं, कृष्ण

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

बिहरत हैं जहां ॥ ३ ॥ कब से योगी श्याम मे, अवधूतिनी कुबिजा भई। कितने दिन के जोगड़ा, तुम ज्ञान बतलाते यहां ॥४॥ (जाव ऊधो ज्ञान लेकर, कूबरी रहती जहां)

बिनती हमारी ऊधो, माधो से जाके कहना। हैं गोपिका तुम्हारी, कभी याद करते रहना॥ १॥जब प्रीति जोरना था, तब हाथ जोरना था। अब नीति तोड़ना क्यों, कुछ हाल देते रहना ॥ २ ॥ हम दीन अति दुखारी, तुम दीन-हित मुरारी। सुधि लीजिये हमारी, फिरियाद सुनते रहना ॥३॥ हम-से अनाथ नाथ तुम-सा लखा न कोई। अर्जी येही बिहारी, मर्जी जरूर करना ॥४॥ (बिनती हमारी ऊधो, माधो से जाके कहना) ॥ इति ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लीजिए ! लीजिए !! लीजिए !!!

श्रीरामचंद्रिका-पुस्तकमाला

की

विचित्र पुस्तकें

इस पुस्तक-माला में निम्न लिखित पुस्तकें तैयार हैं, शीघ्र आइए और रामायण के उत्तम-उत्तम ग्रंथ सुलभ मूल्य में लीजिए।

नारी-धर्म	(पहला भाग)	...	...	।)
,, ,,	(दूसरा भाग)	...	...	।)
,, ,,	(तीसरा भाग)	...	...	।)
,, ,,	(चौथा भाग)	...	...	।)
तिथि-पत्र-चंद्रिका		...	...	...	-)
राम-विवाह-चंद्रिका		...	...	...	-)
बाग-विहार-चंद्रिका		...	...	...	-/
कजरी-राम-चंद्रिका		...	...	...	⅋
अनुराग-चंद्रिका		...	...	...	⅋
करुणा-रत्न-चंद्रिका		...	...	...	⅋

पुस्तकें मिलने का पता—

श्रीरामचंद्रिका-पुस्तकमाला

C/o. पं० चंद्रिकाप्रसाद व्यास, कालभैरव, काशी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection